

SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)



समाज में बढ़ती नशाखोरी युवा पीढ़ी के लिए अभिशाप

अरविन्द सिंह, (Ph.D.), समाजशास्त्र विभाग,
तिलक महाविद्यालय, औरैया, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Corresponding Author

अरविन्द सिंह, (Ph.D.), समाजशास्त्र विभाग,
तिलक महाविद्यालय, औरैया,
उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/10/2021

Revised on : -----

Accepted on : 08/10/2021

Plagiarism : 02% on 01/10/2021



Plagiarism Checker X Originality Report

Similarity Found: 2%

Date: Friday, October 01, 2021

Statistics: 40 words Plagiarized / 2463 Total words

Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

lekt esa c<<+rh u'kk[kksjh; qok ih<+h ds fy. vfhk'kki 'kks/klkj %& orZeku le; esa
u'kk[kksjhizeq[k lkekftd lel;vkksa esa ls ,d gSA blch xaHkhjrk dk irk blh ckr ls yxck tk
ldrk gSA fd ;g ,d ,slh lel;k gS tks vius lkFk vU; dbZ lel;vkksa dks ysdj vkrh gSA; qok ih<+h
fdlh Hkh ns'k dk Hkfo'; gksrh gS vkSj u'kk[kksjh bUgha ;qokvksa dks cM+h rsth ls viuh
fjTr esa ys jgh gSA la;qDr jk'v' dh ,d fjiksVZ ds vuq[kj &Hkhjr esa M*% ds vknh ykxksa
dh laj;k izfro'kZ 30 izfr'kr dh nj ls c<+ jgh gSA tks xaHkhj fpUr dk fo'k; gSA u'kk[kksjh

शोध सार

वर्तमान समय में नशाखोरी प्रमुख सामाजिक समस्याओं में से एक है। इसकी गंभीरता का पता इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह एक ऐसी समस्या है जो अपने साथ अन्य कई समस्याओं को लेकर आती है। युवा पीढ़ी किसी भी देश का भविष्य होती है और नशाखोरी इन्हीं युवाओं को बड़ी तेजी से अपनी गिरफ्त में ले रही है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार –भारत में ड्रग्स के आदी लोगों की संख्या प्रतिवर्ष 30 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है जो गंभीर चिन्ता का विषय है। नशाखोरी का प्रभाव केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं है इसका सीधा असर व्यक्ति, परिवार एवं समाज पर पड़ता है, अर्थात् इसमें वैयक्तिक पारिवारिक एवं सामाजिक विघटन जैसी प्रक्रियाएँ एक साथ चलती हैं। देश में तेजी से पैर पसार रही नशाखोरी जैसी समस्या पर यदि प्रभावी तरीके से अंकुश नहीं लगाया गया तो देश के युवाओं का भविष्य भी सुरक्षित नहीं रहेगा इसलिए सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं तथा शिक्षण संस्थाओं का सहयोग लेते हुए देश के नियत नियन्ताओं को भी इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द

मादक द्रव्य व्यसन, नशामुक्ति आन्दोलन, पुनर्वास केन्द्र, अवसाद, उत्तेजक, मतिभ्रम.

प्रस्तावना

कोई भी समाज सामाजिक समस्याओं से अछूता नहीं है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याओं में नशाखोरी अथवा मादक द्रव्य व्यसन एक गंभीर सामाजिक समस्या है। वर्तमान समय में यह युवा पीढ़ी को ज्यादा प्रभावित कर रही है। वैसे तो मादक पदार्थों का सेवन हर युग में होता आया है परन्तु वर्तमान समय में यह अधिकांश लोगो की दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है।

एक अध्ययन में यह पाया गया कि भारत में प्रतिवर्ष तीस प्रतिशत की दर से नशाखोरी में इजाफा हो रहा है जिसमें युवाओं का प्रतिशत सर्वाधिक है।

नशाखोरी की दशा में व्यक्ति का व्यवहार सामान्य नहीं रहता, वह असामान्य व्यवहार करने लगता है। नशीले पदार्थों के सेवन से डोपाइननामक हानिकारक रसायन निकलता है जो लोगों को दुःख-दर्द भूलने की अनुभूती कराता है। इसके अलावा उनका कुछ समय के लिए आत्मविश्वास बढ़ जाता है इसीलिए वह नशाखोरी की इस प्रक्रिया को बार-बार दोहराता है और वह नशीले पदार्थों के सेवन का आदी हो जाता है। मादक द्रव्यों की उनके प्रभावों के आधार पर तीन भागों में बाँट सकते हैं:

अवसाद, उत्तेजक तथा मतिभ्रम।

नशीले पदार्थों का लगातार सेवन व्यक्ति के हृदय, यकृत तथा किडनी पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है। व्यक्ति अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों से विमुख होने लगता है। नशों के प्रभाव में वह दूसरे व्यक्तियों के साथ बुरा बर्ताव करता है। इनके अलावा वह अपना ढेर सारा आर्थिक नुकसान भी करता है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए व्यक्ति, समाज, सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा देश में बढ़ रही नशाखोरी को रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाये जाने चाहिए। ध्यान एवं योग के माध्यम से मानसिक विकारों को दूर कर तथा उनका उचित समाजीकरण करते हुए नैतिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. नशाखोरी के प्रति समाज को जागरूक करना।
2. नशाखोरी के प्रति दुश्परिणामों से लोगों को अवगत कराना।
3. तेजी से नशाखोरी की गिरफ्त में आ रही युवा पीढ़ी को बचाने का प्रयास करना।
4. नशाखोरी को रोकने के प्रभावी उपाय तलाशना।
5. नशाखोरी के दुश्चक्र से युवा पीढ़ी को निकालने के लिए व्यक्ति, समाज तथा सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं की भूमिका पर विचार करना।

अध्ययन पद्धति

समाज में बढ़ती नशाखोरी युवा पीढ़ी के लिए अभिशाप नामक विषय पर किये जाने वाले अध्ययन में उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक संमकों का प्रयोग किया जायेगा।

प्रत्येक समाज में संगठन एवं विघटन की प्रक्रियायें हमेशा चलती रहती हैं, जिससे भारतीय समाज भी अछूता नहीं है। इसी तरह मद्यपान एवं नशाखोरी जैसे समस्यायें प्रत्येक समाज में हमेशा से ही विद्यमान रही हैं। भारत में भी मादक द्रव्यों का प्रयोग प्राचीन समय से ही होता आ रहा है। कहा जाता है कि प्राचीन समय में आर्य लोग सोमरस नामक मादक द्रव्य का प्रयोग करते थे। इसी तरह मध्यकाल में भी अफीम, गांजा, चरस, कोकीन, आदि का प्रयोग नशा करने के लिए हुआ करता था, वर्तमान में इनके प्रयोग के साथ-साथ शराब, धूम्रपान एवं पान मसाला का प्रयोग बढ़ी मात्रा में किया जा रहा है। चिन्ता का विषय यह कि पहले समाज में कुछ लोग ही वह भी विशेष अवसरों (उत्सवों, त्योहारों) पर ही मादक द्रव्यों का प्रयोग किया करते थे जैसे होली पर भाँग, आदि का प्रयोग करना। परन्तु वर्तमान समय में इनका प्रयोग बढ़ी तेजी से बढ़ रहा है। नशा लोगों की दिनचर्या में शामिल हो चुका है। विशेषकर युवा पीढ़ी इसकी गिरफ्त में सबसे ज्यादा है। नशाखोरी की दशा में व्यक्ति का व्यवहार सामान्य नहीं रहता है, वह असामान्य व्यवहार करने लगता है।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन को एक रिपोर्ट में मादक द्रव्य-व्यसन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा गया है "मादक द्रव्य-व्यसन कम या अधिक समय के लिए उन्माद की वह दशा है जो किसी नशीले पदार्थ के लगातार

उपयोग से उत्पन्न होती है तथा व्यक्ति और समाज दोनों के जीवन को विघटित करती है।

- **मार्क कैलर के अनुसार:** मद्यपान एक ऐसा दीर्घकालिक व्यवहार सम्बन्धी विकार है जिसमें व्यक्ति इतनी अधिक मात्रा में मदिरा सेवन करने लगता है कि उसकी मदिरा पीने की आदत उसके स्वास्थ्य तथा सामाजिक व आर्थिक कार्यों में हस्तक्षेप करने लगती है।
- व्यसन शब्द अधिकांशतः शारीरिक निर्भरता दर्शाता है, अतः 'व्यसन' व शारीरिक निर्भरता एक वह स्थिति है जिसमें शरीर को अपने कार्य संचालन के लिए द्रव्य का निरन्तर सेवन चाहिए। द्रव्य के बन्द कर देने से शरीर के कार्य निष्पादन में हस्तक्षेप होता है तथा द्रव्य में पाये जाने वाले विशिष्ट प्रतिरूप के अनुसार बन्द होने के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। वंचना (Deprivation) के प्रतिपूर्ण प्रतिक्रिया को उपभोग स्थगन संलक्षण (Abstinence syndrome) कहा जाता है।

मादक द्रव्य व्यसन के मुख्य लक्षण है:

1. द्रव्य लेते लेने की अत्यधिक इच्छा या आवश्यकता तथा उसे किसी भी तरीके से प्राप्त करना।
2. मात्रा (डोज) बढ़ाने की प्रवृत्ति।
3. द्रव्यों के प्रभावों पर मनोवैज्ञानिक व शारीरिक निर्भरता।
4. व्यक्ति व समाज पर हानिप्रद प्रभाव।

नशीले पदार्थों के सेवन से बढ़ी मात्रा में डोपाइन नामक रसायन निकलता है। यह रसायन व्यक्ति को परमानन्द की अनुभूति कराता है, उनका आत्मविश्वास बढ़ जाता है। लोग अपने दुःख-दर्द भूलने का अनुभव करने लगते हैं अर्थात् उन्हें कुछ समय के लिए खुशहाल स्थिति का अनुभव होता है, इसीलिए इस परमानन्द को प्राप्त करने के लिए वे बार-बार नशा करते हैं और वे इसके आदी हो जाते हैं। मादक द्रव्यों की लत बहुत बुरी लत है जिसे छोड़ना बहुत मुश्किल काम है। कभी-कभी छोड़ने पर शरीर में नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं मादक द्रव्यों को प्रभावों के आधार पर तीन भागों में बाँट सकते हैं:

1. अवसाद
2. उत्तेजक
3. मतिभ्रम

1. अवसाद (डिप्रेसेन्ट्स)

इस प्रकार के मादक द्रव्यों में कैनबिस, ओपिएट्स, बेंजोडायजेवाइन एवं अल्कोहल, आदि शामिल हैं। ये ऐसे रसायन हैं जो रक्तचाप को कम करते हैं तथा मस्तिष्क से जाने वाले सन्देशों की गति को धीमा कर देते हैं। इस प्रकार व्यक्ति में किसी भी स्थिति को संभालने क्षमता कम हो जाती है और जब इस प्रकार से रसायन को कम मात्रा में लिया जाता है तो इससे उल्टी, मितली, एवं बेहोशी के लक्षण आ सकते हैं।

2. उत्तेजक पदार्थ

यह अवसाद पदार्थों के विपरीत प्रकृति के होते हैं, इस प्रकार के पदार्थ मस्तिष्क से जाने वाले सन्देशों की गति को बढ़ा देते हैं। व्यक्ति को अपने आत्म विश्वास में वृद्धि महसूस होती है। यह रक्तचाप को बढ़ाने का काम करता है। इसके अन्य नकारात्मक प्रभावों में हृदयगति का बढ़ना, पैनिक अटैक, चिन्ता, व्यामोह आदि, उत्तेजक मादक पदार्थों में कोकीन कैफीन, एम्फैटेमिन एवं निकोटीन आदि शामिल हैं।

3. मतिभ्रम (हैलुसिनोजन)

इस प्रकार के मादक पदार्थों में मेस्कालाइन एवं साइलोकाइविन आदि शामिल हैं। ये दवाये मतिभ्रम का कारण बनती हैं और किसी व्यक्ति की वास्तविकता को विकृत कर देती हैं। इससे पागलपन के लक्षण दिखायी पड़ने लगते हैं। जब लगातार इस प्रकार मादक द्रव्यों का सेवन किया जाता है तो उच्च रक्तचाप, मितली, व्यामोह और सुन्नता के लक्षण आ सकते हैं।

नशा करने वाले व्यक्ति केवल शराब पीकर ही नशा नहीं करते नशाखोरी के अन्य साधन भी अपना सकते

है, जैसे – गाँजा, चरस, भाँग, अफीम, कोकीन, स्मैक, एल0एस0डी0, डेस्कोट्रिन, माजून, भॉरफीन, पैथीडीन, एस्पिरीन एवं धूम्रपान, आदि। धूम्रपान को एक ऐसा नशा है जो अपने साथ-साथ उसके आस-पास रहने वाले पारिवारिक सदस्यों एवं अन्यो को सीधे नुकसान पहुँचाता है क्योंकि उसके द्वारा छोड़े गये हानिकारक धुँयें को सामने वाला एवं उसके आस-पास के लोग सीधे ग्रहण कर लेते हैं, जिसके कारण इस होने वाली गंभीर बीमारियों के न चाहते हुए चंगुल में फँस जाते हैं। इसीलिए कभी-कभी ऐसा सुनने में आता है कि अमुक व्यक्ति धूम्रपान तो नहीं करता था फिर भी उसे मुँह अथवा फेफड़ों का कैंसर कैसे हो गया, तो पता चलता है कि वह कभी न कभी धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के सम्पर्क में रहा होगा इसीलिए वह कैंसर का शिकार हुआ है।

नशा करने वाला व्यक्ति जब वह नशीला पदार्थ नहीं लेता है तो उसे बड़ी बेचैनी होने लगती है। भूख न लगना, बदन दर्द होना, चिड़चिड़ापन, बात-बात पर गुस्सा आना, हाथों पैरों में दर्द और भारीपन, अनियंत्रित-रक्तचाप, शारीरिक कंपन, उल्टी, मितली आना, आदि लक्षण दिखाई पड़ सकते हैं। यही कारण है कि नशे की लत छोड़ना थोड़ा मुश्किल काम है परन्तु नामुमकिन बिल्कुल नहीं।

नशाखोरी के प्रमुख कारण निम्नवत हैं:

- पाश्चात्य जीवन शैली को अपनाना जिसमें नशाखोरी आमबात है।
- गरीबी एवं उससे उत्पन्न दुःख, दर्द जिन्हें भुलाने के लिए नशा का सहारा लेते हैं।
- बुरी संगत-बच्चे बुरी संगत में पड़कर शोक-शोक में नशा करना सीखते हैं और कुछ दिनों बाद वे उसके आदी हो जाते हैं।
- नैतिक चरित्र का पतन-युवाओं को नैतिक शिक्षा से दूर रखा जा रहा है, जिससे वे गलत रास्ते पर चले जाते हैं और नशाखोरी के शिकार हो जाते हैं।
- स्वास्थ्य के प्रति अज्ञानता एवं मादक पदार्थों के दुष्प्रभावों की सटीक जानकारी न होना।
- प्रेम में धोखा एवं जीवनसाथी की बेवफाई भी नशाखोरी को बढ़ावा देती है।
- उपर्युक्त के अलावा संयुक्त परिवारों का विघटित होकर एकल परिवारों में परिवर्तित होना, पारिवारिक संगठन में कमी, संयुक्त परिवार न होने से बच्चों पर नजर नहीं रख पाते तथा पति-पत्नी दोनों का नौकरी करना बच्चों के गलत रास्ते पर जाने के अवसर प्रदान करते हैं। फलस्वरूप उनका उचित समाजीकरण नहीं हो पाता है और न ही उनके नैतिक चरित्र का निर्माण हो पाता है, जिसके कारण वे बुरी संगत में पड़कर नशाखोरी के दुष्क्रम में फँस जाते हैं।

नशाखोरी के दुष्परिणाम

नशाखोरी के व्यक्ति, परिवार एवं समाज पर घातक परिणाम दिखाई पड़ते हैं:

- नशीले पदार्थों का लगातार सेवन मस्तिष्क, हृदय, यकृत एवं किडनी पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालता है तथा हार्ट अटैक आने की संभावनायें काफी हद तक बढ़ जाती हैं।
- इससे व्यक्ति अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों से विमुख होने लगता है।
- नशे के प्रभाव में वह दूसरे व्यक्तियों के साथ बुरा बर्ताव करता है जैसे- महिलाओं के साथ छेड़खानी, हिंसा, बलात्कार, आत्महत्या, मोटरवाहन दुर्घटना, असुरक्षित यौन संबन्ध, घरेलू हिंसा आदि।

आर्थिक नुकसान

नशाखोरी करने वाले व्यक्ति का 04 तरीके से सीधा आर्थिक नुकसान होता है:

- नशीला पदार्थ खरीदने हेतु किया गया खर्च।
- नशाखोरी से उत्पन्न बीमारियों के इलाज में किया गया खर्च।

- बीमारी के कारण आर्थिक उद्यम न कर पाना जिसके कारण होने वाली आमदनी रुक जाना।
- इसके अलावा नशे के आदी व्यक्ति के सारे रुपये खर्च हो जाने के बाद, चोरी करना, जमीन, कार, मकान गहने एवं अन्य चल-अचल सम्पत्ति बेच देना आदि हानिकारक आर्थिक प्रभाव देखने को मिलते हैं।

इस सम्बन्ध में **बेंगलडर्फ** का कथन है कि केवल मद्यपान के कारण जितने लोगों की मृत्यु हुई है जितने लोग दुर्घटना के शिकार हुए हैं, जितने लोगों को अपराधों में पकड़ा गया है, जितने विवाह टूटे हैं और औद्योगिक उत्पादन पर जितना प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, उतनी हानि दूसरी सभी बुराईयों को मिलाकर भी नहीं हुई है। सच तो यह है कि मादक पदार्थों के सेवन से व्यक्ति की कार्यकुशलता समाप्त होने तथा उसमें बीमारियों बढ़ने से सम्पूर्ण समाज का सन्तुलन बिगड़ने लगता है। मद्यपान के कारण व्यक्ति अपनी स्थिति से सम्बन्धित भूमिकाओं का समुचित रूप से निर्वाह नहीं कर पाता। सार्वजनिक जीवन में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार बहुत बड़ी सीमा तक मादक द्रव्यों के सेवन का ही परिणाम है।

नशाखोरी रोकने के उपाय

- बालकों का उचित समाजीकरण एवं नैतिक शिक्षा को प्रोत्साहन देकर।
- स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर नशाखोरी के गंभीर हानिकारक प्रभावों की सही जानकारी देकर।
- प्रबल इच्छा शक्ति विकसित कर नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करना।
- पुनर्वास केन्द्र/नशा मुक्ति केन्द्र में भर्ती करवाकर।
- मनोवैज्ञानिक पद्धति द्वारा नशा के प्रति अरुचि पैदा करना।
- ध्यान एवं योग द्वारा मानसिक विकारों को दूर करना।
- अपने पारिवारिक सदस्यों, रिश्तेदारों के साथ ज्यादा समय व्यतीत करना जिससे वे नशा छोड़ने में मदद कर सकें।
- नशाखोरी के नकारात्मक प्रभावों पर सकारात्मक चिन्तन द्वारा।

नशा उन्मूलन को लेकर सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर विभिन्न अभियान व कार्यक्रम चलाये गये हैं व कई नशामुक्ति केन्द्रों की स्थापना भी की गई है, पर यह कार्य इतना आसान नहीं है। सरकारी प्रयासों के साथ-साथ विभिन्न स्वयं सेवी संस्थायें भी नशामुक्ति आन्दोलन को लेकर काफी प्रयासरत हैं।

ऐसी ही एक स्वयंसेवी संस्था "नवज्योति" है। नवज्योति को आन्दोलन के रूप में लेकर चलने वाली व इसे संस्था का जामा पहनाने का श्रेय 'भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ अधिकारी श्रीमती किरण बेदी को जाता है। "नवज्योति" की महासचिव का महत्वपूर्ण पद संभाले श्रीमती बेदी नवज्योति का आज भी "जन का नशे के विरुद्ध आन्दोलन" के रूप में लेकर चल रही है। उनके अनुसार: नवज्योति मात्र एक संस्था ही नहीं बल्कि सतत् आन्दोलन है जिसकी उम्र शायद हम आप नहीं यह समाज व इसके लोग ही तय करेंगे। जो लोग नशे के आदी होते हैं उनके पास लत को छोड़ने का बहुत कम मौका होता है। वे अपने जीवन को बर्बाद कर देते हैं और अपने प्रियजनों को बहुत दुःख भी देते हैं। नशे के इन लोगों का उपचार कर खतरनाक प्रवृत्ति को रोकना होगा इसके लिए स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ-साथ व्यक्तियों को भी सक्रिय रूप से आगे आना होगा ताकि नशे के क्रूर पंजों में कैद इन लोगों को मुक्ति दिलाई जा सके। पहले मुख्य रूप से परम्परागत प्रतिबन्धों, प्रभावी सामाजिक प्रयासों, और आत्म संयम, पर जोर दिये जाने के कारण नशीले पदार्थों की बुराई पर अंकुश लगा रहता था, अब इनमें गिरावट होती जा रही है। इस ओर भी Social Reform की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

इन तमाम प्रयासों के बावजूद युवाओं में नशाखोरी की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती ही जा रही है। हाल के वर्षों में भारत में नशीले पदार्थों की लत गंभीर चिन्ता का विषय बन गई है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत

में ड्रग्स के आदी लोगों की संख्या प्रतिवर्ष 30 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है जो गंभीर चिन्ता का विषय है। इसके कारण धीरे-धीरे व्यक्ति का ही नहीं उसके परिवार एवं समाज का तेजी से विघटन हो रहा है। पिछले कुछ दशकों में नशीले पदार्थों विशेषकर गाँजे और उनसे बने पदार्थों के बढ़ते हुए उपयोग को देखते हुए ऐसा लगता है कि आने वाले निकट भविष्य में युवा पीढ़ी का एक बहुत बड़ा हिस्सा नशे की गिरफ्त में होगा।

सन्दर्भ सूची

1. <https://www.1hindi.com/essay-on-drugabuse-in-hindi/>
2. गोपाल कृष्ण, *समाजशास्त्र*, एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस 3/20-बी निकट तुलसी सिनेमा, आगरा-282002 (उ0प्र0) पृ0-241
3. वही पृ0 - 246
4. आहूजा, राम: *सामाजिक समस्यायें* G4, 4832 / 24 अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं0 410
5. मुकर्जी एवं अग्रवाल: *समाजशास्त्र*, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन्स, 3/20 बी0 आगरा-मथुरा बाईपास रोड निकट तुलसीसिनेमा आगरा 282002, पृ0 223
6. Kellar, Mark ; “*Alcoholism: Nature and extent of the Problem*” in the Annals of the American Academy of Political and social sciences, Vol, 315 January 1958 P-04
7. हिन्दुस्तान (सम्पादकीय दैनिक समाचार पत्र, कानपुर से प्रकाशित दिनांक 15 सितम्बर 2021 पेज नं0 08)
